वीसीडी नं.148 ऑडियो नं.619 इन्द्रप्रस्थ (गोरखपुर+उदयपुर पार्टी)

(डायरेक्ट वाणी)

कल फरीदाबाद गीता–पाठशाला में एक मुरली चल रही थी 17.08.65 की। उसमें दूसरे पेज में बात चल रही थी कि कहते हैं– लक्ष्मी–नारायण भगवान–भगवती थे। अच्छा, लक्ष्मी–नारायण भी भगवान–भगवती थे! तो बाकी पुनर्जन्म लेने वाले कौन हैं? क्योंकि भगवान तो अजन्मा, अकर्ता, अभोक्ता कहा जाता है। वो तो जन्म–मरण के चक्र में आता नहीं है और उस निराकार ज्योतिबिंदु शिव का किसी से कोई हिसाब–किताब, कर्मों का भी लेन–देन नहीं है जो कर्मबंधन में बँधे। तो पुनर्जन्म लेने वाले कौन–2 हैं यह किसी की बुद्धि में बैठता नहीं है। राम–सीता को भी भगवान–भगवती कह देते हैं, शंकर–पार्वती को भी भगवान–भगवती कह देते हैं, फिर पुनर्जन्म लेने वाले कौन? यह किसकी बुद्धि में बैठा नहीं है। बाप बैठ समझाते हैं माना जो भी हम बिंदु–2 आत्माओं का बाप है– शिव ज्योतिबिंदु, वही किसी शरीर में बैठ समझाता है। जैसे गीता में कहा है– **''प्रवेष्टुं'' (11/54)**, मैं प्रवेश करने योग्य हूँ। जैसे और अन्य आत्माएँ प्रवेश कर जाती हैं किसी के शरीर में और अच्छा या बुरा पार्ट बजाती हैं, वैसे मैं भी किसी शरीर में प्रवेश करके पार्ट बजाय सकता हूँ। तो बाप बैठ समझाते हैं– लक्ष्मी–नारायण हों, राम–सीता हों या शंकर–पार्वती हों, उनको तो पुनर्जन्म लेना ही लेना है; क्योंकि वो देवताएँ हैं। देवताएँ जब अच्छे कर्म करते हैं तो देवता बनते हैं और सुख भोगते–2 जब देवता की कोटि से नीचे गिरते हैं तो मनुष्य बन जाते हैं। नर अर्जुन और नारी द्रौपदी जैसे नर और नारी, दोनों मिल करके जब पुरुषार्थ करते हैं तो नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बन जाते हैं। ये तो पुनर्जन्म में आने वाली आत्माओं की बातें हैं। मैं जो निराकार परम् ब्रह्म परमेश्वर हूँ, वो कभी पुनर्जन्म में नहीं आता हूँ माने गर्भ से जन्म नहीं लेता हूँ। मेरा दिव्य जन्म है। मैं गर्भ में प्रवेश न करके किसी शरीर में प्रवेश होकर अपना पार्ट बजाता हूँ।

लक्ष्मी–नारायण सतयुग में सूर्यवंशी थे, फिर चंद्रवंशी बने। अनेक जन्म लेते–2 आत्मा की कला कम होती जाती है। सतयुग में 16 कला सम्पूर्ण होते हैं, त्रेता में दो कलाएँ कम हो जाती हैं, द्वापर में द्वैतवाद आने से तेजी से घटती कला होती है। जैसे कोई बीज होता है, वो कई बार जब बोया जाता है तो उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है। कोई भी परिष्कृत बीज होता है, पहले–2 उसमें ज़्यादा दाने निकलते हैं, ज़्यादा फल निकलते हैं, दुबारा बोया जाता है तो पहले की अपेक्षा कम फल देने वाला बनता है, उसका पौधा भी छोटा होता जाता है। ऐसे ही ये ज्योति बिंदु–2 आत्माएँ हैं, उस परमपिता–परमात्मा शिव की संतान हैं। बाप और बच्चे का रूप एक जैसा होता है। साँप का बाप साँप जैसा ही लम्बा होगा, हाथी का बाप भी हाथी जैसा लम्बा–चौड़ा होगा। तो हम जो बिंदु–2 आत्माएँ हैं, जिनकी यादगार मस्तक में बिंदु लगाया जाता है या स्मृति में टिकने की निशानी टीका लगाया जाता है, वो ज्योतिबिंदु आत्माएँ भी परमपिता–परमात्मा शिव की तरह ज्योतिबिंदु हैं।

अब शिव बाप को याद करने के लिए भक्तिमार्ग में ऋषियों–मुनियों ने उस ज्योति बिंदु का बड़ा आकार शिवलिंग बनाय दिया। वो शिवलिंग सिर्फ भारत में ही नहीं पूजा जाता है; विदेशों में भी जहाँ–2 खुदाइयाँ हुई हैं, चाहे ग्रीस में हुई हों, मेसोपोटामिया में हुई हों, मोहनजोदड़ो–हड़प्पा में हुई हों, हर जगह वो 4/5 हज़ार वर्ष पुराने शिवलिंग मिले हैं, जो उसकी यादगार को आज तक भी कायम बताते हैं कि वो ज्योतिबिंदु का बड़ा आकार शिवलिंग बहुत पुराने समय से पूजा चला आता है। वो जन्म–मरण के चक्र में नहीं आता है, वो पुनर्जन्म नहीं लेता। अगर वो भी पुनर्जन्म में आने लगे तो हम जन्म–मरण के चक्र में आने वाली आत्माओं को छुड़ाने वाला इस संसार में कोई नहीं है। इसलिए वो एक तुरीया आत्मा है। बाकी लक्ष्मी–नारायण, राम–सीता, शंकर–पार्वती– ये सब देवताएँ हैं, जो अच्छे कर्म करके देवताएँ बनते हैं, सुख भोगते–2 नीचे गिरते हैं तो मनुष्य बनते हैं और संग के रंग में आकर राक्षसों जैसे भी बन सकते हैं। मनुष्य अच्छे कर्म करता है तो नर से नारायण बनता है, बुरे काम करता है तो राक्षस बन जाता है। बाकी राक्षसों की कोई अलग से योनि नहीं होती है। देव योनि कहा जाता है। देव योनि का मतलब ही है जिसके अन्दर दिव्यता भरी हुई हो। जो दूसरों को सुख देता हो, सुख लेने की इच्छा करने वाला न हो, इच्छा मात्रम् अविद्या की स्टेज वाला हो, वो नारायण जैसा कहा जाता है। गीता में परमात्मा हमारे मनुष्य जीवन का लक्ष्य देता है कि हे अर्जुन! तू ऐसी करनी कर, जिससे तू नर से नारायण बने और नारी द्रौपदी, तू ऐसी करनी कर जिससे तू नारी से लक्ष्मी बने।

वास्तव में हम ही पहले सूर्यवंशी बनते हैं सतयुग में, त्रेता में चंद्रवंशी बने, द्वापर में वैश्यवंशी बने और कलियुग में आ करके सब शूद्रवंशी हो जाते हैं। परमात्मा आ करके यह कोई नई बात नहीं

बता रहा है। शास्त्रों में भी मनुष्य गुरुओं ने लिखा हुआ है। आज से 400/500 साल पहले तुलसीदास जी ने आ करके लिख दिया– **'भये वर्ण संकर सबै',** सब जातियाँ वर्ण संकर हो गईं माने सब शूद्र हो गए। इस दुनिया में कोई ब्राह्मण, देवता नहीं रहा। ब्राह्मणों को देवता कहा जाता है। ब्रह्मा की औलाद को ब्राह्मण कहा जाता है। जैसे विष्णु की औलाद को या विष्णु के फॉलोअर्स को वैष्णव कहते हैं; शिव की औलाद को, शिव के फॉलोअर्स को शैव कहते हैं; ब्रह्मा के फॉलोअर्स को ब्रह्म समाजी कहते हैं, ऐसे ही ब्रह्मा की औलाद ब्राह्मण कहे जाते हैं। तो बच्चे के अर्थ में एक मात्रा बढ़ जाती है– ब्रह्मा से ब्राह्मण, विष्णु से वैष्णव, शिव से शैव। तो यहाँ भी ऐसे ही है। ब्रह्मा मुखवंशावली जो होते हैं वो सिर्फ कलियुग के अन्त में आ करके बनते हैं, जब ब्रह्मा के द्वारा सृष्टि रची जाती है। यह सृष्टि जब बहुत ही तमोप्रधान हो जाती है तो एक तरफ परमात्मा आ करके इस तामसी सृष्टि के विनाश के लिए 'हर–2 बम–2' का जो भारतीय नारा प्रसिद्ध है, शंकर की मूर्ति के द्वारा कार्य कराने के लिए सन्नद्ध हो जाता है और दूसरी ओर, ब्रह्मा के द्वारा नई सृष्टि रचने के लिए शूद्रों को ब्राह्मण बनाने का कार्य शुरू करता है। आज से 65/67 साल पहले एटमिक एनर्जी का नाम–निशान भी नहीं था और ढेर के ढेर जो भगवान आए हुए हैं, भगवान बन करके बैठे हुए हैं इस भारतवर्ष में, वो भी नहीं थे। जब सच्चा हीरा आता है तो नकली हीरे भी बनाए जाते हैं।

67 साल पहले, 1936 में जब सारे भारतवासियों की एक ही आवाज़ थी– हे पतित–पावन आओ! गाँधीजी के साथ मिल करके एक आवाज़ से, वायब्रेशन से परमात्मा को खींच रहे थे उस समय उनके अंजान में परमात्मा इस सृष्टि पर आ चुका था और आ करके उसने दोनों ही कार्य इस सृष्टि पर शुरू कर दिए। एक तरफ एटमिक एनर्जी का निर्माण शुरू हुआ– उस समय कोई नाम–निशान भी नहीं जानता था कि एटम बॉम्ब क्या चीज़ होती है; क्योंकि हमारी भारतीय परम्परा में शंकर के नाम के साथ 'हर–2 बम–2' शब्द जुड़ा हुआ है। तो बमों के द्वारा वो इस सारी अशान्त सृष्टि को शान्त कर देता है। वो कार्य भी शुरू हुआ और दूसरी तरफ सिंध हैदराबाद से ब्रह्मा के द्वारा प्रत्यक्ष रूप में स्थापना भी शुरू हुई, जिसका फाउण्डेशन कलकत्ते में पड़ा। जहाँ आज भी इस सृष्टि–वृक्ष की यादगार बनियन ट्री खड़ा हुआ है। सृष्टि–वृक्ष के बारे में गीता में भी बोला हुआ है– **''अश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।''** (15/1) यह सृष्टि एक उल्टा लटका हुआ झाड़ है। उसकी यादगार वहाँ गंगा–सागर के किनारे वो झाड़ दिखाया हुआ है। जिसका मेन थुर और मुख्य जड़ लोप हो चुकी है; देवी–देवता सनातन धर्म। जहाँ सारी सृष्टि वसुधैव कुटुम्बकम् का प्रैक्टिकल रूप थी। दुनिया में एक ही राजा होता था, एक ही राज्य होता था, एक ही धर्म होता था और एक ही दैवी परिवार था।

आज से 2500 वर्ष पूर्व, द्वापरयुग से द्वैत फैलाने वाले जो दूसरे–2 धर्मपिताएँ आए, जैसे– इब्राहीम के द्वारा इस्लाम धर्म स्थापन हुआ, बुद्ध के द्वारा बौद्ध धर्म स्थापन हुआ, 2000 साल पहले क्राइस्ट के द्वारा क्रिश्चियन धर्म स्थापन हुआ और द्वैतवाद के आने से जो सनातन धर्म की मर्यादाएँ थीं वो तोड़ दी गईं। तो दुनिया में दो–2 धर्म, दो में से चार धर्म, दो–2 राज्य, चार–2 राज्य, वो राज्यों की संख्या भी बढ़ती चली गई, धर्मों की संख्या भी बढ़ती चली गई, मत–मतांतरों की भी संख्या बढ़ती चली गई और कुल भी अनेक हो गए। जब अनेकता बढ़ती है तो अशान्ति आती है और अशान्ति के बढ़ते–2 कलह–कलेश का युग आ गया। जब इस सृष्टि में सभी धर्मपिताएँ आ करके अपना–2 करिश्मा दिखाकर चले जाते हैं और यह दुनिया चरित्र के आधार पर नीचे गिरती चली जाती है, मनुष्यों के दैवी चरित्र बिगड़ करके आसुरी/राक्षसी चरित्र बनते जाते हैं और कोई को आशा नहीं रहती कि यह सृष्टि अब सुधर सकती है, सब निराश हो जाते हैं, तब भारत में भगवान आता है और बताता है कि बच्चे, मैं एक निराकार परम् ब्रह्म परमेश्वर ऐसा हूँ, जो इस सृष्टि को आ करके सुधारता हूँ, कलियुग से सतयुग बनाता हूँ, झूठ खण्ड को सच खण्ड बनाता हूँ। मैं पुनर्जन्म नहीं लेता हूँ, और बाकी जितने (भी) देवताएँ हैं, चाहे राधा–कृष्ण हों, चाहे राम–सीता हों, चाहे लक्ष्मी–नारायण हों, वो सब पुनर्जन्म में आते रहते हैं। पुनर्जन्म में आते–2, ज़िंदगी के सुख भोगते–2 आत्मा रूपी बीज कमज़ोर होता जाता है। इसका मिसाल है– आज से 400/500 साल पहले (की) महाराणा प्रताप की तलवार आज भी म्युज़ियम में रखी हुई है, हम सामान्य लोग उस तलवार को उठा (भी) नहीं सकते (और वो उस तलवार से युद्ध करते थे); क्योंकि उनका लम्बा–चौड़ा शरीर था। उस समय आत्मा रूपी बीज में पावर थी तो शरीर रूपी झाड़ भी पावरफुल था। अब हम भारतवासियों के शरीर आत्मा के तमोप्रधान होने के कारण तामसी बन गए हैं, आँखें अंदर घुस गईं, शरीर बेडौल हो गए और विकृत सुख भोगते–2 हमारी आत्मा में विकृति आने के साथ–2 शरीर भी पूरे बीमार–धीमार, दुःखी, रोगी, परेशान हो गए।

अभी परमात्मा बाप आ करके बताय रहे हैं कि बच्चे, जो भी देवताएँ हैं, उन सबको पुनर्जन्म लेना है। पुनर्जन्म लेते–2 जब नीचे गिर जाते हैं फिर हम शूद्र सो ब्राह्मण बनते हैं, ब्राह्मण सो सुधर करके फिर देवता बनते हैं, बनेंगे। अभी परमपिता परमात्मा ने ब्रह्मा को एडॉप्ट करके ब्राह्मण बनाया है। भक्तिमार्ग में शास्त्रों की पढ़ाई पढ़ाने वाले मनुष्य गुरू तो यह समझते हैं कि ब्रह्मा ने मुँह से कोई आवाज़ निकाली होगी, 'हुआ' किया होगा और मुख से ब्राह्मण निकल पड़े। इसलिए शास्त्रों में लिख दिया कि ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण निकले। सृष्टि का (जो) विराट पुरुष है उसके मुख से ब्राह्मण निकले, भुजाओं से क्षत्रिय निकले, जंघाओं से वैश्य निकले और पाँव से शूद्र निकले। अब यह तो अंधश्रद्धा की बात हो गई। वास्तव में इसका गुह्यार्थ है। मनुष्य सृष्टि या मनुष्य रूपी जो विराट स्वरूप है, वो चार भागों में बँटा हुआ है– जिसको सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग कहते हैं।

जैसे कोई ड्रामा होता है, कोई नाटक होता है, उसमें चार सीन होते हैं, वैसे ही यह वर्ल्ड ड्रामा है, जिसमें ये चार सीन नूँधे हुए हैं। सतयुग–त्रेता उड़ती कला है, उठती कला है, सुख का युग है और द्वापर–कलियुग गिरती कला है, दुःख का युग है। ये रात से दिन और दिन से रात। ब्रह्मा की रात और ब्रह्मा का दिन शास्त्रों में गाया हुआ है। 2500 वर्ष हम मनुष्य आत्माएँ कोई ठोकर नहीं खातीं और 2500 वर्ष, द्वैतवाद आने के कारण, मनुष्य गुरुओं के चक्र में फँसने के कारण–कोई मंदिरों में भटकता है, कोई मस्ज़िदों में भटकता है, कोई गुरूद्वारों में भटकता है; ठोकरें ही ठोकरें खाते रहते हैं।

सत् तो एक परमात्मा ही है। परमपिता परमात्मा शिव के सिवाय इस दुनिया में कोई सत्य नहीं है। सब संकल्पों से, कर्म से, वचन से, अपने जीवन को झूठ साबित कर देते हैं। अब परमात्मा बाप आ करके हमको सच खाना, सच पहनना, सच बोलना और सत्य कर्म करना सिखाय रहा है। वो ब्रह्मा के तन में आकर बोलता है। उसको मुख चाहिए। उसको अपना मुख नहीं है। उसको अपने कान नहीं हैं। इसलिए शास्त्रकारों ने कह दिया है– **बिनु पग चलै, सुनै बिनु काना, कर बिनु कर्म, करै विधि नाना, आनन रहित सकल रस भोगी**। लेकिन जब उनसे पूछा जाए, कैसे सकल रस भोगी? कैसे बिना आँखों के देखता है? तो कहते हैं– वो तो भगवान है, कुछ भी कर सकता है। नहीं, भगवान आ करके अंधश्रद्धा नहीं सिखाता। वो तो सीधा–सा हल दे रहा है कि जैसे भूत–प्रेत आत्माएँ प्रवेश कर जाती हैं, मैं भी प्रवेश करता हूँ। मैं किसी मनुष्य तन में प्रवेश करके ज्ञान सुनाने का काम करता हूँ। मेरा और कोई पार्ट नहीं है। तुम्हारा आत्माओं–2 के साथ हिसाब–किताब है। मेरे साथ तुम्हारा कोई ऐसा हिसाब–किताब नहीं है, जो मैं जन्म–मरण के चक्र में आऊँ और 84 के चक्र में फँसूँ।

कोई पूछे– कैसे तुम शूद्र से ब्राह्मण बने? (कैसे तुम ब्राह्मण से देवता बने?) कैसे तुम देवता से शूद्र बने? तो तुम बताय सकते हो। बोलो– ब्रह्मा मुख से परमपिता–परमात्मा ने हमको ब्राह्मण बनाया है। ब्रह्मा की औलाद ब्राह्मण कहे जाते हैं। ब्रह्मा का दूसरा नाम शास्त्रों में मनु बताया है। मनु माने मनन–चिंतन–मंथन करने वाला। एक होते हैं जानवर और एक होते हैं मनु की औलाद मनुष्य। जानवरों को जब आवेग आता है तो वो कोई मनन–चिंतन–मंथन नहीं करते हैं; आवेग आया और जो कुछ करना है–काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार–अपना वो पूरा कर लेते हैं। उनको जानवर कहा जाता है और मनुष्य? मननात् मनुष्य कहा जाता है। जो मनन–चिंतन करता है वो मनुष्य कहा जाता है। कोई भी काम करने से पहले मनुष्य मन का उपयोग करता है। तो परमात्मा बाप आ करके हम बच्चों को ब्रह्मा के मुख से–यह बात समझाते हैं– बच्चे, इस मन को पहले जीतना है। **मन ते हारे हार, मन ते जीते जीत**। मन को कंट्रोल कर लिया तो ये दसों इन्द्रियाँ– पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ ये सब कंट्रोल में आ जावेंगी। जब ये कंट्रोल में आ जावेंगी तो रावण के जो दस सिर हैं, जो सारी दुनियाँ को डुलायमान कर रहे हैं– काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और प्रकृति के पाँच तत्व– पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश ये सब तुम बच्चों के सहयोगी बन जाएँगे।

इस सृष्टि को परिवर्तन करने का सारा मदार तुम्हारे ऊपर है; लेकिन ये सब सिखाने वाला कौन है? बोलो– बाप ही पतितों को पावन बनाते हैं। वो इस सृष्टि पर आकर बाप बनता है, माता भी बनता है। इसलिए पहला रूप आता है– 'ब्रह्मा'। क्या? जो साधारण सृष्टि रची जाती है, मनुष्य जो हद की सृष्टि रचते हैं तो बच्चा पहले किसके सम्पर्क में आता है? माँ के सम्पर्क में आता है, माँ को पहचानता है। ऐसे ही परमात्मा बाप जिस मनुष्य तन में प्रवेश करते हैं वो मृदुल पार्टधारी आत्मा है कृष्ण की सोल। जिसके लिए शास्त्रों में कहा गया है– हे कृष्ण नारायण वासुदेव! वो दोनों एक ही आत्मा हैं– नारायण अथवा कृष्ण। वही जन्म–मरण के चक्र में आते–2 आखरी जन्म में आ करके सिंध हैदराबाद में दादा लेखराज ब्रह्मा के रूप में जन्म लेती है। कलकत्ते में जा करके उनकी

जवाहरात की दुकान बनती है और वहाँ वो अपना धंधा करते हैं। 60 वर्ष का होने के बाद उनका धंधे में मन नहीं लगता। तो सतसंग में अपनी बुद्धि लगाते हैं और उसी समय उनको भगवान के साक्षात्कार होते हैं, दुनिया का साक्षात्कार होता है और वो साक्षात्कार के आधार पर वायरे हो जाते हैं; क्योंकि उनका अर्थ उन्हें पता नहीं चलता क्या होने वाला है! उन अर्थों को समझने के लिए वो अपने गुरू से पूछते हैं। गुरू उनको कोई समाधान नहीं दे पाता। सोचते हैं, एक गुरू हमने जो बनाया, हम उसमें फेल हो गए होंगे, हमने अच्छा गुरू नहीं बनाया। बनारस में बड़े–2 अच्छे विद्वान, पंडित, आचार्य हैं उनसे जाकर पूछूँ। तो कई महीनों तक बाबा ब्राह्मणों के संग में आए, बनारस की विद्युत मंडली में गए, बड़े–2 अवधूतों और बड़े–2 साधुओं से मिले; (लेकिन) उनकी शंका का समाधान किसी ने नहीं किया। आखरीन उनकी गुरुओं से श्रद्धा हट गई और वो अपने जीवन पर विचार करने लगे कि हमारे जीवन में ऐसा व्यक्ति कौन है जो हमें सबसे सच्चा साबित हुआ? तो 10 साल से उनका एक भागीदार था दुकान में, जो उनका लौकिक सम्बन्धी भी था, वो भी जवाहराती था; लेकिन उनके जवाहरातों की दुकान इस कलियुगी संसार में जास्ती चलती नहीं थी। ब्रह्मा बाबा ने उनको अपना भागीदार बना लिया। जब अपना सतसंग शुरू किया तो यह तय किया कि जितनी भी हमारी करोड़ सम्पत्ति है उससे तुम यह दुकान सम्भालो और तुम्हारी रही मेहनत और मेरा रहा पैसा, जो भी कमाई हो उसमें से आधा हमको देते रहना। हम तो जाकर सतसंग में लगते हैं। इस त्याग और तपस्या का फल उनको मीठा मिला। भगवान (ने) उनमें प्रवेश करके उनके द्वारा कार्य शुरू किया; लेकिन एकदम शुरुआत में नहीं। पहला जो कार्य है वो उसी भागीदार के द्वारा शुरू होता है। वो भागीदार राम की आत्मा थी।

राम और कृष्ण यही इस सृष्टि रूपी रंगमंच के दो पहिये हैं, जिनको दूसरे धर्मों में एडम और इव, आदम और हव्वा कहा जाता है। वही मात–पिता का पार्ट बजाते हैं। वास्तव में उनकी आत्माएँ मात–पिता का पार्ट नहीं बजातीं, विश्व–सृष्टि के मात–पिता बनने के गट्स उनमें नहीं होते हैं। आखरी जन्म में सुप्रीम सोल जब उनमें प्रवेश करता है तब वो मात–पिता का पार्ट बजाते हैं। ब्रह्मा बाबा बनारस से जब कलकत्ते पहुँचे तो उन्होंने अपने साक्षात्कारों की सारी बात भागीदार के सामने रख दी और भागीदार में परमात्मा शिव ने प्रवेश होकर उनके साक्षात्कारों का सारा क्लैरीफिकेशन दे दिया। ज्ञान का बीज तो ब्रह्मा के बुद्धि रूपी पेट में पड़ा और तल्लीन हो करके सतसंग में सिंध हैदराबाद में अपना सतसंग का कार्य शुरू कर दिया। उस समय जो भक्तिमार्ग की गीता है, जो सर्वशास्त्र शिरोमणि गाई जाती है, उस गीता (के) ही अर्थ करके सुनाए जाते थे। उस समय गीता के गुह्यार्थ नहीं खुले थे, तो ऊपर–2 की जनरल नॉलेज सुनाई जाती थी। जैसे गीता में आत्मा का स्वरूप बताया– **"अणोः अणीयांसमनुस्मरेत् यः।"** (8/9) आत्मा अणुरूप है यह बात बुद्धि में बैठाई गई। ये सिंधियो में जो कहावत है– भृकुटी के बीच चमकता है अजब सितारा। यह गीता के वाक्य से मिलती हुई बात है। भृकुटी के बीच में वो आत्मा रूपी राजा इस शरीर को कंट्रोल करने वाला बैठा हुआ है, जिसकी यादगार में लोग बिंदी या टीका लगाते हैं। मनुष्य आत्मिक स्मृति में बना रहे, देहभान में ना आए, देह की स्मृति से परे बना रहे इसके लिए ऋषियों–महर्षियों ने यह युक्ति बताई थी कि अपने को बिंदु आत्मा समझो, बिंदी मस्तक में धारण करो। टीका लगाओगे तो आत्मिक स्मृति में टिकने की याद बनी रहेगी। एक/दूसरे को देखने से स्त्री–पुरुष का भान उतना नहीं पकड़ेगा। लेकिन बाद में यह एक परम्परा मात्र रह गई। बिंदी और टीका अपनी जगह लगाया जाता रहा और उसका जो असली अर्थ था वो लोगों को भूल गया।

इस ज्ञान का बीजारोपण यज्ञ के आदि से ही हो चुका था कि हम ज्योतिबिंदु आत्माएँ हैं और वो बिंदु बाप परमपिता परमात्मा हमारा बाप है। वो बिंदु–2 आत्माओं का बाप भी बिंदु है; लेकिन अंतर सिर्फ इतना है कि हम आत्माएँ जन्म–मरण के चक्र में आने वाली हैं, जन्म लेते–2 ऊँच ते नीच गिरने वाली हैं और वो ऊँच ते नीच कभी नहीं गिरता। वो सदाशिव कहा जाता है। शिव माना कल्याणकारी। वो सदैव ही कल्याणकारी है। देवताएँ तो देव योनि में एक/दूसरे के कल्याणकारी होते हैं। जब देवताएँ गिरते–2 नीचे गिरते हैं तो तामसी बन जाते हैं। कोई–2 राक्षसी स्वभाव वाले भी बन जाते हैं। तो वो दुःखदायी बन जाते हैं। तो मनुष्य आत्माएँ जन्म–मरण के चक्र में आकर नीचे भी गिरती हैं। सुप्रीम सोल शिव कभी नीचे नहीं गिरता। वो मनुष्य तन में प्रवेश करके भी सब प्रकार के मनुष्यों के, जो साधारण मनुष्य के कर्म होते हैं वो कर्म करते हुए भी कर्मेन्द्रियों को कंट्रोल करके रहता है। वो किसी को दुःख नहीं दे सकता। उसकी हर प्रकार की वाचा, उसके हर प्रकार के कर्म साधारण मनुष्यों को साधारण देखने में आवेंगे; लेकिन जो अनेक जन्मों की ज्ञानी तू आत्माएँ रही होंगी, ज्ञान में विचरण करने वाली रही होंगी वो उस बात की गहराई को जल्दी समझ जाती

हैं। समझाने वालों के ऊपर भी होता है और जो होता है वो पूर्व जन्मों के हिसाब–किताब से ही होता है। पूर्व जन्मों का हिसाब–किताब हर मनुष्य आत्मा के जीवन में बहुत महत्व रखता है। जब वो हिसाब–किताब एक/दूसरे से मिलते हैं तो ज्योति से ज्योति जग जाती है। इसकी यादगार दीपावली मनाई जाती है। पहले यमराज का एक बड़ा दीपक जलाया जाता है। धर्मराज कहो, यमराज कहो। धर्म का जो राजा है, जिसको शास्त्रों में नाम दे दिया– युद्ध स्थिर। धर्मराज युधिष्ठिर कहते हैं। वो आत्मा पहले जगती है और जग करके दूसरी–2 जो नम्बरवार पुरुषार्थी आत्माएँ हैं, उन आत्माओं की ज्योति को जगाती है, इसलिए पहले यमराज का दीपक जलाते हैं और बाद में दूसरे–2 दीपकों को जलाया जाता है। उनमें भी पहले थाली में आठ दीपक रखते हैं, जो अष्टदेवों की यादगार है। हमारे भारत में कोई भी अनुष्ठान होगा तो नवग्रहों का पूजन किया जाता है। उनमें एक है स्वयं परमात्मा ज्ञान–सूर्य और अष्टदेव आत्माएँ, जो नवग्रहों के रूप में आज भी पूजी जाती हैं। ज़रूर उन्होंने इतना पवित्रता का व्रत धारण किया है, जिसके आधार पर उनकी पूजा होती है। तो वो देव आत्माएँ सारे संसार की ज्योति जगाती हैं, निमित्त बनती हैं।

तुमसे कोई पूछे कि तुम ब्राह्मण कैसे बने हो? बोलो, ब्रह्मा मुख से परमपिता परमात्मा ने हमको (ब्राह्मण) बनाया है। वो बाप ही है जो पतितों को पावन बनाते हैं। अभी हम प्रतिज्ञा करते हैं पवित्रता की। क्या? पतितों को पावन तो बनाते हैं; लेकिन एक शर्त रख देते हैं। कौन–सी शर्त रख देते हैं? जो प्रतिज्ञा–पत्र लिखाया जाता है, जो निश्चय–पत्र लिखाया जाता है उसमें क्या लिखाया जाता है? वही गीता का वचन। गीता में भगवान ने जो अर्जुन से कहा है– अर्जुन, यह काम और क्रोध तेरे महाशत्रु हैं, तू इनको त्याग दे। तो आजीवन जो ब्रह्मचर्य व्रत है वो आजीवन पवित्रता का व्रत धारण करना परमात्मा सिखाता है और वो संन्यासियों जैसी पवित्रता नहीं सिखाता है कि घर–गृहस्थ छोड़ करके जंगल में चले जाओ। वो बीवी, बाल–बच्चों को अनाथ बनाना नहीं सिखाता है। वो तो सिखाता है कर्मेन्द्रियाँ हैं तो कर्मेन्द्रियों से कर्म भी करना है; लेकिन ऐसा कर्म करना है जिससे कोई को किसी प्रकार का दुःख महसूस न हो। अगर कर्मेन्द्रियों से किसी को दुःख दिया तो उसको अपवित्रता कहेंगे। अपवित्रता जब तक जीवन में है तब तक देव योनि में नहीं पहुँच सकते। वाचा की अपवित्रता हो, दृष्टि की अपवित्रता हो, कर्मेन्द्रियों की अपवित्रता हो, अपवित्रता ही मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी दुश्मन है। इसलिए पाँच विकारों में यह काम विकार सब विकारों का दुश्मन, सबसे बड़ा डकैत है, जो मनुष्यों के जीवन को बिगाड़ने वाला है।

भगवान बाप जब आते हैं तो इस काम विकार के ऊपर जीत पहनना सिखलाते हैं। उन जीत पाने वालों में जो मनुष्य आत्मा सबसे आगे जाती है उसका नाम रखा है– 'राम'। जिसका अर्थ होता है– **'रम्यते योगिनो यस्मिन इति रामः'**। जिस राम में परमात्मा प्रवेश करके संसार में राम बाप के रूप में प्रत्यक्ष होता है। संसार में वो शंकर के नाम–रूप से भी प्रत्यक्ष होता है। इसलिए शास्त्रों में कहा गया है– **औरों एक गुपुत मत सबै कहूँ कर जोर, शंकर भजन बिना नर भगत कि पावै मोर**। माना शिव–शंकर की स्मृति के बगैर कोई भी मनुष्य आत्मा राम की अनुकंपा प्राप्त नहीं कर सकती। क्यों? क्योंकि वो शिव की सोल राम के अंतिम जन्म में राम में ही प्रवेश करके संसार का पिता बनती है। जिनको शंकर–पार्वती कहा जाता है। **"जगतं पितरं वंदे पार्वती परमेश्वरौ"**। जैसे राधा–कृष्ण की आत्मा ब्रह्मा–सरस्वती के रूप में संसार में प्रसिद्ध होती है, ऐसे ही राम–सीता की आत्मा शंकर–पार्वती के रूप में संसार में प्रसिद्ध होती हैं। तो शंकर–पार्वती कहो, राम–सीता कहो, राधा–कृष्ण कहो, ये सब देवताओं के नाम हैं। ये कोई भगवान नहीं हैं। उनको सुप्रीम सोल बाप नहीं कहेंगे।

सुप्रीम सोल शिव बाप जब इस सृष्टि पर आता है तब ही पतितों को पावन बनाता है। अब पतित–पावन कृष्ण क्यों नहीं कहा जाता? पतित–पावन राधा क्यों नहीं कहा जाता? पतित–पावन सीता–राम का ही नाम पहले क्यों लिया जाता है? ज़रूर उन्होंने प्रवृत्तिमार्ग में रह करके ऐसा कोई कर्म किया है जिससे कर्मेन्द्रियों पर जीत पाई है और कर्मेन्द्रियों पर जीत पाने के कारण उनका आज तक भी यह गायन चला आ रहा है– **'पतित–पावन सीता–राम'**। हालाँकि राम–सीता की आत्माएँ या राधा–कृष्ण की आत्माएँ अगर पतितों को पावन बनाने वाली होतीं तो इससे पूर्व के जन्मों में भी पतितों को पावन बना लिया होता। उस सुप्रीम सोल के आगे वो राम–कृष्ण की आत्माएँ भी वर्थ नॉट–ए–पेनी हैं। वो सुप्रीम सोल जब इस सृष्टि पर आता है तब राम–कृष्ण जैसी आत्माओं को भी ऊँचा उठाता है।

तो बाप पहले–2 प्रतिज्ञा कराते हैं पवित्रता की। बाबा जिनको बहुत ज़्यादा महत्व देते हैं वो है– कन्याओं का जीवन; क्योंकि भारतीय परम्परा में कन्याओं की बहुत पूजा होती है। संन्यासी भी

जा करके कन्याओं के पैर छूते हैं। तो कन्या का जीवन भारतीय परम्परा में ऊँचा माना जाता है। माँ–बाप कन्याओं का पद पूजन करते हैं; नहीं तो बच्चे माँ–बाप के पाँव छूते हैं; लेकिन भारतीय परम्परा ऐसी है (जिसमें) कन्याओं को इतना मान दिया हुआ है। तो कन्याएँ इतना श्रेष्ठ जीवन बिताने के कारण उनको जो जन्म देने वाली आत्माएँ हैं वो भी कोई निराली और विशेष आत्माएँ होंगी। क्या? अगर राम की आत्मा को इस आखरी 84वें जन्म में जन्म देने वाला कोई व्यक्तित्व है, कृष्ण की आत्मा को इस आखरी जन्म में शारीरिक जन्म देने वाला कोई–व्यक्तित्व है तो कोई साधारण आत्माएँ तो नहीं होंगी। साधारण होंगी? नहीं होंगी। ज़रूर विशेष आत्माएँ होंगी। तो इसलिए परमात्मा बाप आ करके कहते हैं– बच्चे, मैं विशेष आत्माओं को चुन रहा हूँ। क्या? लौकिक जीवन में भी राम–कृष्ण दोनों एक/दूसरे के भागीदार थे, हीरे–जवाहरातों के पारखी थे और इस ब्राह्मणत्व के अलौकिक जीवन में जब आते हैं तो भी जो हीरे रूपी पार्ट बजाने वाली आत्माएँ हैं उनके पारखी हैं, उन आत्माओं को विशेष महत्व देने वाले हैं। आगे–पीछे तो होता रहता है। उसके लिए बाप ने बताया है कि लास्ट में आने वाले भी फास्ट जा सकते हैं। भले कोई ज्ञान में लास्ट में आया हो तो भी आगे जा सकता है।

क्यों आगे जा सकता है? गीता में लिखा हुआ है, शास्त्रों में भी लिखा हुआ है कि ब्राह्मणत्व का जन्म जो एक बार ले लेता है वो जन्म कभी व्यर्थ नहीं जाता। पूर्व जन्म में जिन्होंने ब्रह्मा की औलाद बनने का सौभाग्य प्राप्त कर लिया वो शरीर छोड़ने के बाद जब इस जन्म में भी आएगा तो वो पूर्व जन्म की कुछ न कुछ प्रारब्ध ले करके आता है। उस प्रारब्ध के आधार पर उसका पूर्व जन्म का जो ब्राह्मणत्व का जीवन है वो अगले जन्म में एड हो जाता है। तो अभी हमारा सच्चा ब्राह्मणत्व का जीवन है। वो ब्राह्मण तो अपने को ब्रह्मा की औलाद ब्राह्मण कहते हैं, वास्तव में वो ब्रह्मा की औलाद नहीं हैं; क्योंकि ब्रह्मा को उन्होंने पहचाना नहीं है। ब्रह्मा के मुख से निकली हुई बातों पर वो चलते नहीं हैं। यहाँ तो बाप कहते हैं– जो ब्रह्मा मुख की बात माने वो पक्का ब्राह्मण। जो अपने जीवन में पवित्रता का व्रत धारण करे वो पक्का ब्राह्मण। वैसे भी हिस्ट्री में देख लो जितने भी राजाएँ हुए हैं, जो भी अपने बड़े–2 मंत्रियों, महामंत्रियों, आमात्यों को बनाते हैं तो वो ब्राह्मणों का चुनाव करते हैं। क्यों करते हैं? क्योंकि ब्राह्मण जीवन को पवित्र मानते हैं।

इसलिए बाबा ने कहा– तुमसे कोई पूछे– तुम ब्राह्मण कैसे बने हो? तो बताओ कि हम डायरैक्ट ब्रह्मा के मुख से ज्ञान सुन करके ब्राह्मण बने हैं। जो शास्त्रों में गायन है– ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण निकले। कोई मशीन नहीं रखी होती है जिसमें से ब्राह्मण निकले। ये तो प्रैक्टिकल बातें हैं। तो बोला– अभी हम प्रतिज्ञा करते हैं पवित्रता की। बाप को याद करने से ही हम पावन बनते हैं। क्या? तरीका क्या बताया? अनेक जन्म लेते–2 हम ज्योतिबिंदु आत्माएँ भल पतित बन गई हैं। जैसे बीज कमजोर हो जाता है, ऐसे ही आत्मा रूपी बीज भी सुख भोगते–2 कमज़ोर हो गया। तो यह बिंदु आत्मा जब कमज़ोर हो जाती है, तामसी बन जाती है, काली बन जाती है, तब परमात्मा बाप आ करके तरीका बताते हैं कि बच्चे, जैसे तुम ज्योतिबिंदु आत्मा हो, भृकुटी में चमकता हुआ अजब सितारा हो, जिसकी रोशनी आँखों से निकल रही है। इन आँखों से निकलने वाली जो रोशनी है, यह उस आत्मा सितारे की रोशनी है। जब यह आत्मा इस शरीर को छोड़ करके निकल जाती है तो इस शरीर में जो आँखें हैं वो बटन जैसी हो जाती हैं। उनमें कोई भी रोशनी नहीं रहती; क्योंकि आत्मा स्वयं प्रकाश स्वरूप है, अणुरूप है, ज्योतिस्वरूप है। उस ज्योतिर्लिंगम का यादगार आज भारतवर्ष में बारह लिंगों के रूप में पूजा जाता है।

ज्योति बिंदु–2 आत्माओं का बाप सुप्रीम सोल ज्योतिबिंदु शिव भी ज्योतिबिंदु है। वो जब इस सृष्टि पर आता है, किसी मनुष्य तन में प्रवेश करता है तो यह बात बताता है कि बच्चे, तुम देहभान को छोड़ दो। यह देह का भान बहुत नीचे गिराने वाला है। मैं डॉक्टर हूँ, मैं मास्टर हूँ, मैं प्रोफेसर हूँ, मैं ब्राह्मण हूँ, पंडित हूँ, मैं राजा हूँ, मैं रानी हूँ ये देह के टाइटिल हैं, आत्मा के टाइटिल नहीं हैं। अगर एक/दूसरे को आत्मिक दृष्टि से देखें तो सब परमात्मा के बच्चे आत्मा–2 भाई–2 हैं; भाई–बहन भी नहीं हैं, भाई–2 हैं। अगर भाई–2 की दृष्टि में टिकेंगे तो कोई ऊँच–नीच नहीं रह जाता। जब ऊँच–नीच नहीं रह जाता तो किसी पर क्रोध आने की भी बात नहीं रहती। काम और क्रोध की भी बात नहीं रहती। यह स्त्री चोला हमने भी कई जन्म धारण किया होगा, यह पुरुष चोला हमने भी कई जन्म धारण किया होगा। तो यह तो डब्बा है, डब्बे का रूप बदलता रहता है। जो असली चीज़ है स्मृति में रखने की वो है ज्योतिबिंदु आत्मा, स्टार। जो भृकुटी के मध्य में चमक रहा है; (लेकिन) इन आँखों से देखने में नहीं आता। इन आँखों से तो मलेरिया के कीटाणु, जो एक बूँद (खून) में सैकड़ों की तादाद में होते हैं, वो भी देखने में नहीं आते। तो क्या मलेरिया के कीटाणु नहीं

होते? अभी तो डॉक्टरों ने ऐसा यंत्र निकाल दिया (जिससे) वो उन कीटाणुओं को देख लेते हैं। ऐसे ही परमात्मा भी हमको दिव्य बुद्धि का ऐसा यंत्र दे रहा है, आत्मिक स्थिति में टिकने का ऐसा यंत्र दे रहा है, जिससे हम अपनी आत्मा के भी अनेक जन्मों के पार्ट को जान सकते हैं और परमात्मा को भी पहचान सकते हैं। अभी परमात्मा बाप हमको बताय रहा है कि तुम देह की स्मृति से, मिट्टी की स्मृति से मिट्टी जैसी बुद्धि वाले बन गए। चोर–डकैतों का जो संग करेगा तो उसकी बुद्धि में चोर–डकैतों के संस्कार आएँगे ना! ऐसे ही अगर हम मन–बुद्धि से देह को याद करते रहेंगे, चाहे अपनी देह को कि मैं बड़ा मिनिस्टर हूँ और चाहे दूसरों की देह को, तो देह तो मिट्टी है वो मिट्टी, मिट्टी में मिल जाने वाली है; लेकिन इस मिट्टी के अंदर जो आत्मा हीरा है वो शाश्वत है। वो कभी नष्ट होने वाला नहीं है। हाँ, तामसी बन चुका है। उस तामसी को सात्विक बनाने के लिए वो सुप्रीम सोल जनरेटर आया हुआ है, जो पावर की खान है, जो कभी नीचे नहीं गिरता, सदाशिव कहा जाता है। उस ज्योतिबिंदु शिव को अगर हम याद करेंगे तो आत्मा रूपी बैटरी चार्ज हो जाएगी। इस एक अंतिम जन्म में आत्मा रूपी बैटरी जितनी–2 चार्ज हो जाएगी उतनी हम पावरफुल आत्मा बन जाएँगे।

ऐसे तो दुनिया में 500/700 करोड़ मनुष्य आत्माएँ हैं। ये 600/700 करोड़ की आबादी अब होने जा रही है। ब्रह्मलोक से लास्ट में उतरने वाली ऐसी आत्माएँ हैं जो मनन–चिंतन–मंथन को जानतीं ही नहीं। कीड़े–मकोड़ों के सदृश्य हैं। इसलिए मुरली में बाप ने बताया है कि असली मनुष्य आत्माएँ हैं– 500 करोड़। 500 करोड़ मनुष्य आत्माओं का बाप मैं इस सृष्टि पर आया हूँ मनुष्यों को देवता बनाने के लिए। चाहो तो आत्मा रूपी बैटरी को अभी चार्ज कर सकते हो। तुम्हारी आत्मा रूपी बैटरी डिस्चार्ज हो चुकी है। इसका प्रूफ यह है कि देवताओं के जो चित्र हैं वो कितने आकर्षणमय दिखाए जाते हैं, बड़ी–2 आकर्षणमय आँखें दिखाई जाती हैं, उनके चेहरों में आकर्षण होता है। आज मनुष्य का आकर्षण, दृष्टि का आकर्षण खत्म होता चला जा रहा है। आँखें अंदर को धँसती चली जा रही हैं। इस शरीर के अंदर मुख्य ज्ञानेन्द्रियाँ कौन–सी हैं? कहते हैं ना ये दोनों बच्चे तो मेरी आँखें हैं। आँखों से मिसाल क्यों देते हैं? क्योंकि जो भी पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, उनमें आँखें ही सबसे श्रेष्ठ मानी जाती हैं। दृष्टि का पतन हो जाए तो सृष्टि का पतन हो जाता है; दृष्टि पावन बन जाए तो सारी सृष्टि पावन बन सकती है। इस दृष्टि के ऊपर सारा मदार है।

दृष्टि से सृष्टि सुधरती है। इसलिए आज की परम्परा में जो मनुष्य गुरू हैं, उनके लिए भी भक्त लोग यह कहते चले आ रहे हैं गुरूजी की कृपा–दृष्टि चाहिए। यहाँ कृपा–दृष्टि की बात नहीं है। यहाँ असली बात है आत्मा का परमात्मा के साथ कनेक्शन जोड़ना। स्मृति रूपी धागे के द्वारा यह कनेक्शन जोड़ा जाता है। जैसे कोई बैटरी जब चार्ज की जाती है तो निगेटिव और पॉजिटिव तार बड़ी बैटरी के साथ जोड़ा जाता है या जनरेटर के साथ जोड़ा जाता है तो बैटरी चार्ज होती है। ऐसी ही यह हमारी आत्मा रूपी बैटरी है, इसे परमात्मा अभी चार्ज करने के लिए आया हुआ है। डिस्चार्ज बैटरी जब चार्ज हो जाएगी तो नम्बरवार आत्माएँ इस सृष्टि पर प्रसिद्ध होंगी। पहले अष्टदेव प्रसिद्ध होंगे। भारतीय परम्परा में जो भी कोई अनुष्ठान होता है, नव ग्रहों के रूप में पूजे जाते हैं। भगवान के साथ उनकी भी पूजा होती है। उसके बाद 108 श्रेष्ठ आत्माएँ हैं जो वैजयंती माला कही जाती है। जिन्होंने अन्त में विकारों के ऊपर पूरी विजय प्राप्त कर ली। वो भी फर्स्ट क्लास आत्माएँ हैं। उनका चुनाव अभी होने वाला है। वो आत्माएँ भी प्रत्यक्षता रूपी जन्म लेने वाली हैं।

जैसे कोई बच्चा होता है, जब तक गर्भ में गुप्त है, तो कोई नहीं जानता। बच्चा जब गर्भ से बाहर आता है, प्रत्यक्ष होता है तो पहले घर वालों को, फिर गाँव वालों को (पता पड़ता है), (धीरे–2) चारों तरफ उसकी शोहरत होती जाती है। ऐसे ही यह दिव्य जन्म आत्मा लेती है तो संसार में वो आत्मा प्रत्यक्ष होना शुरू होती है। चाहे वो राम की आत्मा हो, चाहे कृष्ण की आत्मा हो, चाहे सीता की आत्मा हो, चाहे राधा की आत्मा हो, पार्वती की आत्मा हो। अभी 500 करोड़ मनुष्य आत्माएँ इस सृष्टि पर अपने स्वरूप को पहचानने वाली हैं। यह सृष्टि रूपी रंगमंच है। इस रंगमंच पर कोई भी पार्टधारी अपने पार्ट को अगर न जाने तो परमात्मा बाप कहते हैं– वो बेवकूफ एक्टर है, जो अपने पार्ट को ही नहीं जानता। अभी बाप हम बेवकूफ एक्टर्स को आ करके बुद्धिमान बनाय रहे हैं। ऐसा बुद्धिमान बनाय रहे हैं जो हर ज्योतिबिंदु आत्मा अपने स्वरूप में टिकने के बाद अपने 84 जन्मों को भी जान सकेगी। अगर कम जन्मों को जाना है तो कम जन्म लेने वाली होगी; अगर पूरे 84 के चक्र को जान लिया तो मनुष्य से देव पद पाने वाली होगी।

तो अभी का यह जो टाइम है, कौन–सा टाइम? एटम बॉम्ब फटने से पहले का टाइम। आज से 50/60 साल पहले लोगों को यह पता ही नहीं था एटम बॉम्ब क्या चीज़ होती है। मनुष्य रूप में भगवान भी इस सृष्टि पर आते हैं कलियुगी दुनिया में, यह किसी को पता ही नहीं था। अभी जहाँ जाओ वहाँ भगवान। कितने भगवान निकले हुए हैं भारतवर्ष में! उन ढेर के ढेर भगवानों के बीच कोई हीरा भी छुपा हुआ है। जिसके लिए गीता में कह दिया है– मूढ़मति मनुष्य मेरे को नहीं पहचान पाते; क्योंकि मैं साधारण तन में आता हूँ। परमात्मा बाप जब आते हैं तो कोई चमत्कार नहीं करते, प्रकृति के कोई भी नियमों को नहीं तोड़ते। वो सारे काम सहज–2 ऐसे ही करते हैं जैसे कोई सामान्य मनुष्य करता है। इसलिए उस सुप्रीम सोल को इन आँखों से नहीं पहचाना जा सकता। ये आँखें विनाशी हैं, सुप्रीम सोल और आत्मा अविनाशी हैं। किसी आत्मा के पार्ट को हम इन आँखों से देख करके नहीं पहचान सकते। परमात्मा बाप आ करके हमको यह तीसरा नेत्र देता है। वो त्रिनेत्री आ करके बनता है। वो ज्ञान का तीसरा नेत्र देता है। जिस ज्ञान नेत्र से हम अपने आत्मा के अनेक जन्मों को भी पहचानते हैं और परमात्मा बाप के उस साधारण स्वरूप में उस विशेष तुरीया पार्ट बजाने वाले सुप्रीम सोल को भी पहचान लेते। वो किन विशेष मूर्तियों के द्वारा पार्ट बजाता है उन त्रिमूर्तियों को भी पहचान लेते हैं। कौन ब्रह्मा है, कौन विष्णु है, कौन शंकर है यह पूरा अच्छी रीति समझ में आ जाता है। प्रूफ सहित समझ में आना चाहिए। बिना प्रूफ और प्रमाण के बुद्धिमान लोग मानने के लिए तैयार नहीं होते।

बुद्धिमानों की बुद्धि परमात्मा शिव इस सृष्टि पर आया हुआ है। बुद्धि का वरदान देने वाला है। तो हम क्यों ना वो वरदान लेवें! अभी लास्ट चान्स है। हम सबका आखरी जन्म है। एटमिक एनर्जी हमारे घरों की सजावट के लिए नहीं बनी हुई है। ये बनी है अपना कार्य पूरा करने के लिए। ये वही महाभारी महाभारत प्रसिद्ध मूसल हैं, ये वही गीता में प्रसिद्ध भगवान की दाढ़े हैं, जिनके लिए भगवान ने कहा– हे अर्जुन! यह सारा संसार मेरे ऊपर की और नीचे की दाढ़ों में चबाया जाने वाला है। ये एटमिक एनर्जी रूपी एटम बॉम्ब ऊपर भी तैर रहे हैं और नीचे ज़मीन में सुरंगों में भी रखे हुए हैं। यह दुनिया काल के गाल में है। बारूद के ढेर के ऊपर बैठी हुई है दुनिया। लेकिन संसार में ये सब सामान्य रूप से क्यों चल रहा है? इसलिए चल रहा है कि परमात्मा का जो स्थापना का कार्य है, नई दुनिया बनाने का कार्य है, वो अभी पूरा नहीं हुआ। ये कार्य जब पूरा होता है, स्थापना हो जाती है, राजधानी स्थापन हो जाती है, दैवी राजधानी बन जाती है, तो एटमिक एनर्जी अपना काम करना शुरू करती है। एटम बम्बों के विस्फोट से प्रकृति डोलायमान हो जाती है। पृथ्वी डोलायमान होगी, भूकम्प आएँगे तो ये बड़ी–2 अटारियाँ, महल–माड़ियाँ, जो मल्टीमिलियनेयर्स के बनाए हुए मल्टी मंज़िल के मकान हैं वो ताश के पत्तों की तरह उड़ जाएँगे। इससे पहले हम बच्चों को अपना पूरा पुरुषार्थ कर लेना है; नहीं तो यही हो जाएगा कि भगवान मिला और भगवान मिलने के बाद भी अपना भाग्य नहीं बना पाया। जो गायन है कि **'ब्रह्मा भाग्य बाँटने के लिए आया और तुम सोए हुए थे क्या?** तो ऐसा गायन सार्थक करने वालों की लिस्ट में हमारा नाम नहीं आना चाहिए। हम तो परमात्मा बाप के सिकीलधे बच्चे बनेंगे। हम उसका विरोध करने वाले राक्षसी बच्चे साबित होने वाले नहीं हैं। शास्त्रों में जो चेहरे दिखाए गए हैं, 2000 साल पहले अजंता, एलोरा, एलिफेंटा की जो गुफाएँ बनी थीं, उनमें जो चेहरे दिखाए गए हैं, वो चहरे अभी तैयार हो रहे हैं। चाहे राक्षसी चेहरा बनाएँ और चाहे दैवी चेहरा बनाएँ यह तकदीर की चाबी परमात्मा बाप हमारी मुट्ठी में दे रहा है। वो दुनिया वाले तो सिर्फ गाते हैं मुट्ठी में है तकदीर हमारी। वास्तव में तो अभी हमारी तकदीर हमारी मुट्ठी में है। ओमशान्ति।